स्वतंत्रता व्यक्ति की जिम्मेदारी

डॉ0 श्याम नारायण यादव
अस0 प्रोफेसर (बी0एड0 विभाग)
श्रीम.रा.दा. पी0जी0 कॉलेज,
भुड़कुड़ा, गाजीपुर

स्वतंत्रता हमे अपने जीवन का स्वामी बनाती हैं लेकिन इसके साथ यह माग भी करती है कि अपने निर्णयों के लिये जवाबदेह रहें समाज में रहते हुए एक दूसरे के अधिकारो का सम्मान करना स्वतंत्रता का सच्चा सार है। स्वतंत्रता सिर्फ बाहरी बंधनों से मुक्ति नहीं है, यह हमारे विचारो, कार्यों और जीवन के उद्देश्य को स्वतंत्र रूप से चुनने की शक्ति है। स्वतंत्रता जीवन को सार्थक बनाती है और हमे सच्चा इन्सान बनने का अवसर देती है स्वतंत्रता का पहला आयाम है, विचारों की स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति की अपने विचार स्वयं बनाने का अधिकार है समाज अक्सर हमे अपने नियमों और रीति-रिवाजो के अनुसार सोचने के लिये मजबूर, करता है। अपने मन को खुला रखें, सवाल करें, तर्क करे और सत्य की खोज करें। यदि आप दूसरो के विचारो को बिना जाँचे-परखे स्वीकार करते हैं, तो आप अपनी बौद्धिक स्वतंत्रता खो देते हैं। अपने विचारों को व्यक्त करने का साहस करें, क्योकि सही और सच्ची स्वतंत्रता की शुरुआत है। समाज हमे एक निश्चित ढांचे में ढालने की कोशिश करता है, लेकिन जीवन तो हमारा है। अपनी पसंद का जीवन जिए लेकिन यह सुनिशचित करे कि हमारा स्वतंत्रता दूसरी की स्वतंत्रता का अतिक्रमण न करे। स्वतंत्रता का उददेश्य केवल स्वच्छंदता नहीं है, बल्कि यह है कि हम अपने सर्वश्रेष्ठ स्वरूप को प्राप्त करें स्वतंत्रता हमे अपने गुणों, प्रतिभाओ और क्षमताओ को विकसित करने का अवसर देती है. इन्सान कोई मशीन नहीं है, जो किसी निश्चित ढांचे में काम करे, बल्कि एक वृक्ष है, जिसे अपनी शाखाओं को फैलाने और सूर्य की ओर बढ़ने के लिए स्वतंत्रता चाहिए। अपने जीवन में प्रयोग करे, नई चीजें सीखें और अपने अनुभवो से बढ़े। जॉन स्टुअर्ट मिल ने लिखा है-स्वतंत्रता हमें यह स्थान देती है, जहाँ हम स्वयं को खोज सकते हैं। लेकिन ध्यान रहे स्वतंत्रता की सीमाए हैं। हमारी स्वतंत्रता वहां समाप्त होती है जहां हम दूसरो को नुकसान पहुंचाना शुरू करते हैं। समाज में रहते हुए हमे एक-दूसरे के अधिकारो का सम्मान करना चाहिए।

यह सतुलन स्वतंत्रता का सच्चा सार है। अपनी आजादी को जीना औरों की, आजादी को भी महत्व देना बेहद जरुरी है। स्वतंत्रता व्यक्ति की जिम्मेदारी है। यह हमे अपने जीवन का स्वामी बनाती है. लेकिन इसके साथ यह मांग भी करती है कि हम अपने निर्णय के लिए जवाबदेह रहें। व्यक्ति जो अपनी स्वतंत्रता का उपयोग नही करता, वह अपनी मानवता का त्याग करता है अपने जीवन को सचेत रूप से जिए। अपने विचारों को स्वतंत्र रखे अपने कार्यों को नैतिक बनाए और अपने सपनो को साकार करे।

'स्वतंत्रता और स्वच्छंदता में गुणात्मक अंतर है। ओशो ने अपने एक प्रवचन में समझाया है। आज तक जमीन पर यह घटना घटी ही नहीं है कि स्वतंत्र चित व्यक्ति कभी स्वच्छंद हुआ हो। स्वच्छंद होता है, परतन्त्र, चित परतंत्र चित्त जब क्रोध से भर जाता है, तो स्वच्छंद हो जाता है। हमारे सभी नई पीढियी के युवक आज क्रोध से भरे है। इसलिए स्वच्छंद होते जा रहे हैं। इसमें हजारो वर्ष से मनुष्य के मन पर लादी गई दासता का हाथ है। जब तक हम इस सत्य को न जानेंगे, तब तक न तो हम मनुष्य को परतत्रता से बचा सकते है। और न स्वच्छदता से परतंत्र चित्त स्वच्छंद होना चाहता हैं। स्वाच्छद चित को देखकर हम घबराते हैं और परतंत्रता को थोपने की कोशिश करते है। जितनी हम स्वच्छंदता पैदा होती है, उतने हम भयभीत हो

जाते हैं और परतंत्रता के नए आयोजन करते हैं। ऐसा एक दुष्चक्र हजारो वर्षों से मनुष्य के उपर चल रहा है। अब यह शायद अंतिम घड़ी मे पहुंच गया शायद परतंत्रता इतनी गहरी हो गई है की उसके परिणाम मे आदमी सब भांति स्वच्छद हो जाना चाहती है। चित को हम जितना दबाते है, उसकी उतनी प्रतिक्रियाएं शुरू हो जाती है। स्वच्छंदता और परतंत्रता दोनो एक ही सिक्के के दो पहलू है। अगर यह समझ में आ जाए तो ख्याल मे आ सकता है कि स्वतंत्रता की बात ही कुछ और ही है।

***

शिक्षा और मानव जीवन

डॉ० श्याम नारायण यादव
अस० प्रोफेसर (बी०एड० विभाग)
श्रीम.रा.दा. पी०जी० कालेज
भुड़कुड़ा, गाजीपुर

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूण स्थान है। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में मानव शिशु पराश्रित होता है। किन्तु शिक्षा ही वह प्रकिया है जिसकी सहायता से पर निर्भर शिशु अपना विकास करता है और समाज में उपयुक्त स्थान प्राप्त करता है, यह शिक्षा द्वारा ही अपना सर्वागीण विकास करके अपने को अन्य चेतन प्राणियो से अलग रखता है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव - जाति के अर्जित गुण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होते रहते है। शिक्षा की प्रक्रिया सम्भवतः उतनी ही पुरानी है जितना स्वयं मानव जीवन पुराना है। शिक्षा देने और ग्रहण करने का कार्य आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में अनवरत चला आ रहा है और किसी न किसी रूप में चलता रहेगा।

मानव विकास के इतिहास में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिक्षाशास्त्री विलियम ब्वायड ने लिखा है 'एतिहासिक काल से बहुत पहले मानव जब धीरे धीरे जंगली जीवन छोडकर सामाजिक जीवन की ओर बढ़ रहा था। सीखने का कार्य निश्चय ही अधिक अंश में अनुभव और अनुकरण पर आश्रीत था। किंतु प्रस्तर युग में भी किसी न किसी प्रकार की व्यवस्थित शिक्षा थी, इसका अभास उस काल से सम्बधित पशुओं के उन सुन्दर चित्रों से मिलता है। जो सीगो पर हाथी दातों पर या गुफा के दिवारो पर खुदे हुए पाये गये है'।

इस प्रकार शिक्षा का इतिहास मनुष्य के इतिहास के साथ जुडा है मानव के विकास के साथ- साथ शिक्षा का भी विकास होता गया, संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा की क्रिया के द्वारा ही मानव के आचार-विचार तथा रहन सहन ने परिवर्तन और परिर्माजन सम्भव होता रहा है, और सभ्यता के सीढ़ियो पर निरंतर क्रमिक रीति से बढ़ता रहा है। आदिम मनुष्य के असभ्य एवं बबर जीवन की तुलना में आज के मनुष्य का सभ्य एंव सुसंस्कृत जीवन वास्तव में शिक्षा की ही देन है। मानव की उन्नति सभ्यता एंव ज्ञान-विज्ञान की प्रगति का एक मात्र साधन शिक्षा है। आज मानव सभ्यता के शिखर पर शिक्षा के द्वारा ही पहुंचा है।

शिक्षा प्राणी मात्रा की एक सहज क्रिया है जो कि मानव जाति तक ही सीमित नही है। बरन व्यापक रूप से जीव मात्र, पशु-पक्षी, आदि अनुकरण और अनुभव के माध्यम से सिखते है। प्रत्येक प्राणी अपने वातावरण से समायोजन करने के लिये प्रयत्न करता है, ताकि वह भली भाँति सुख पुर्वक जीवन जी सकें। इसके लिये वह अपने चारो ओर के वातावरण से निरंतर संघर्ष करता रहता है। इस वातावरण में उसे विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते है। इस प्रकार अर्जित अनुभवो से वह नवीन ज्ञान प्राप्त करता है। यह शिक्षा की ही विशेषता है कि मनुष्य विवेकशील प्राणी के रूप में अन्य समस्त प्राणियो से विशिष्ट और सर्वोत्कष्ट प्राणी है। शिक्षा अपने परिष्कृत एव शुद्ध रूप मे मानव को विवेकशील उन्नतशील बनाती है।

मानव जीवन का शिक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध है मानव ने अपनी उन्नति के लिए - शारीरिक शक्ति, मानसिक विकास, बौद्धिक उन्नति, भौतिक आनन्द और आधात्मिक पूर्णता की प्राप्ति के लिये एक मात्र शिक्षा का ही सहारा लिया, असभ्य मानव को सभ्य गुणो तथा सुसंस्कृत बनाने के लिए कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, गाँधी, टैगोर डा०अम्बेडकर जैसे यहाँ अनेक पुरुषों ने शिक्षा को ही उपयुका साधन बताया है। शिक्षा के माध्यम से ही संसार की वैज्ञानिक, आर्थिक

सामाजिक सास्कृतिक विकास, आध्यत्मिक उन्नति, सम्भव हुई है। शिक्षा व्यक्ति के लिये पौष्टिक भोजन है। जिससे व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, भौतिक, भावात्मक तथा आध्यात्मिक विकास होता है। और ज्ञान को मानव जीवन के विकास के लिये महत्वपूर्ण माना गया है, शिक्षा द्वारा व्यक्ति ज्ञान अर्जन करता है भारतीय संस्कृति में ज्ञान को मनुष्य का तिरारा नेत्र बताया गया है। 'ज्ञान तृतीय मनुजस्य नेत्र' और ज्ञान को ऐसा प्रकास कहा गया है, जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रो को प्रकाशित करता है। जीवन मार्ग की कठिनाइयों का सामना सरलता पूर्वक कर सकता है। जैसा कि प्रो० जॉन डीवी के अनुसार भोजन की जो महत्ता और उपयोगिता शरीर के लिए है, वैसे ही शिक्षा समाजिक जीवन के लिये है। शिक्षा का प्रभाव आज समस्त ससार में स्पष्ट दिखाई देता है, शिक्षा के कारण ही हमारी सभ्यता और संस्कृति सुरक्षित है।

इस प्रकार शिक्षा एक गतिशील प्रवाह है। जिसके कारण मानव के आचार विचार रहन सहन तथा संसार के विभिन्न बातो की ओर दृष्टिकोण मे परिर्वतन होता रहता है और नये विचारो का जन्म होता है ये विचार किया के रूप में परिर्वतन होता है। इस प्रकार अच्छे समाज का निर्माण होता है, अरस्तु ने कहा -मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में रह कर ही अपना विकास करता है समाज के लिये व्यक्ति को शिक्षा प्राप्ति करना, अत्यन्त आवश्यक है। जैसा कि -लॉक महोदय ने कहा है जिस प्रकार पौधो का विकास खेत की अच्छी जूताई से होता है। उसी प्रकार मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है। शिक्षा को मुक्ति का मार्ग भी कहा गया है। भारतीय उपनिषद में जगत गुरू आदि शंकराचार्य ने कहा है सा विद्या या विमुक्तये' विद्या या शिक्षा वह है जो हमे जीवन की सभी कठिनाइयों से मुक्त करती है। इस प्रकार मानव जीवन का शिक्षा से धनिष्ठ सम्बन्ध है। मानव की जीवन दृष्टि जो भी रही हो उसने अपने सवार्गिण विकास के लिए शिक्षा का ही सहारा लिया है और जब तक संसार में मानव का अस्तित्व रहेगा शिक्षा की गतिशील प्रक्रिया चलती रहेगी।

***

''बेटियाँ पिता के सर की बोझ नहीं, बल्कि गर्व की पूंजी होती है''

- सोनम कुमारी
बी.ए. प्रथम वर्ष

समाज में अक्सर यह धारणा पाई जाती हैं कि बेटियाँ पिता के लिए बोझ होती है। लेकिन क्या वाकई बेटियाँ बोझ होती है? या यह धारणा समाज की एक गलत सोच का परिणाम है? इस निबंध में हम इसी विषय पर चर्चा करेंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि बेटियाँ पिता के लिए कितनी महत्वपूर्ण होती है।

बेटियों का महत्व:- बेटियाँ किसी भी परिवार की धरोहर होती है। वे न केवल अपने परिवार का नाम रोशन करती है, बल्कि समाज में भी अपनी एक अलग पहचान बनाती है। बेटियों को पढ़ाने-लिखाने और उन्हें आगे बढ़ाने से न केवल उनका भविष्य उज्ज्वल होता है। बल्कि पूरे परिवार का भी भविष्य उज्जवल होता है।

पिता और बेटी का रिश्ता:- पिता और बेटी का रिश्ता बहुत ही पवित्र और अनमोल होता है। पिता अपनी बेटी को हमेशा खुश देखना चाहते हैं और उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। बेटी भी अपने पिता का सम्मान करती हैं और उनकी हर बात को मानती हैं। यह रिश्ता विश्वास और प्रेम पर आधारित होता है।

बेटियों को बोझ मानने की भ्रांति:- कुछ समाजों में बेटियों को बोझ मानने की भ्रांति फैली हुई है। इसका कारण है दहेज प्रथा और अन्य सामाजिक कुरीतियाँ। लेकिन यह सोच बिल्कुल गलत है। बेटियाँ भी बेटों की तरह ही अपने माता-पिता का नाम रोशन कर सकती है और समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सकती है।

निष्कर्ष:- अंत में, यह कहा जा सकता है कि बेटियाँ पिता के सर की बोझ नहीं, बल्कि गर्व की पूंजी होती हैं। वे अपने परिवार का नाम रोशन करती है और समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाती हैं। इसलिए हमें बेटियों को बोझ नहीं, बल्कि एक वरदान मानना चाहिए और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।.

इस निबंध के माध्यम से हमने जाना कि बेटियाँ किसी भी परिवार के लिए कितनी महत्वपूर्ण होती है और उन्हें कभी भी बोझ नहीं माना जाना चाहिए

***